IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

प्रेमचंद के साहित्य में वृद्ध विमर्श

किरण कुमारी (लेक्चरर), नेट:हिंदीं , एडुकेशन, हिंदी शोधार्थी

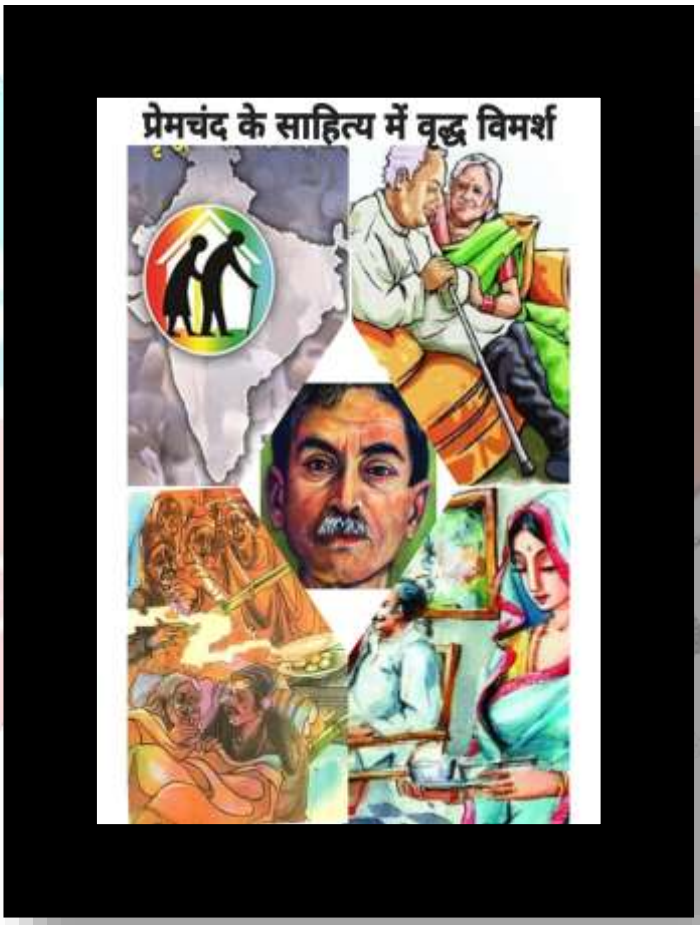

सारांश : आज का युवा वर्ग पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित होकर अपने माता-पिता की उपेक्षा कर रहे हैं। कभी घर में अकेले छोड़ना , कभी तीर्थ के बहाने कुंभ के मेले मे कभी स्टेशन पर, कभी बताकर अनाथ आश्रम में छोड़ना स्वार्थी युवा वर्ग की नियति हो गई है। साहित्य समाज का दर्पण रहा है इसलिए समाज की घटनाओ को - चित्रित कर जागृति लाना साहित्यकारो और शोधाथियो का कर्तव्य है। साहित्य के क्षेत्र में कई विमर्शो में स्त्री विमर्श ,किन्नर विमर्श , प्राकृतिक विमर्श ,युवा विमर्श के साथ साथ वृद्ध विमर्श आज ज्वलेत मुद्दा बना हुआ है। राह से भटके युवाओ को संभालने का ब बीड़ा अब साहित्यकारो ने उठाया है। प्रेमचंद पूर्व युग में मनोरंजन ,जासूसी और अय्यारी किस्म की लेखनी ने प्रसिदि पाई। परन्तु प्रेमचंद युग आते आते लोगों ने सामाजिक सरोकार की बाते प्रारम्भ , उनमें प्रमुख प्रेमचंद थे ' । प्रेमचंद जी अपने युग के युगद्दष्टा और भविष्य वक्ता थे । उन्होंने बीसवी सदी के सभी विमर्शी की झलक अपने उपन्यासों ,कहानी, नाटक ,लेख, निबंध आदि में कही मुख्य रूप से तो कही गौण रूप से दिखाने का प्रयास किया है। आज के समाज में आने वाली भयावह स्थिति से लोगो को किस तरह आगाह करना चाह रहे थे। उनसे प्रेरणा पाकर प्रेमचंदोत्तर युग के कई साहित्यकारो ने माँ की महिमा , नैतिकता का प्रश्न ,युवा वर्ग की मानसिक विकृति से प्रभावित समाज , वृद्ध , स्त्री की यातनापूर्ण जिन्दगी , प्रेम , कुण्ठा , पश्चाताप , काम -पीड़ा , अहम भाव का समर्पण जैसे मुद्दे को अपना विषय बनाया ।

प्रेमचंद के प्रेमाश्रम , सेवासदन ,वरदान उपन्यास में गौण रूप से तथा बेटो वाली विधवा आदि कहानियों में वृद्ध की समस्या मुख्य रूप से दृष्टिगोचर होती है । आज वृद्ध विमर्श का महत्व भारत की सभ्यता और संस्कृति के संरक्षण के लिए बहुत आवश्यक है। इतना ही नहीं विकृत युवा वर्ग और रूढ़िगत अनुपयोगी परम्पराओ को मानने वाले वृद्ध दोनों ही इस समाज के परिवर्तन और प्रगति के बाधक है। इसके लिए प्रयासरत प्रेमचंद जी अपने साहित्य को आधार बनाये। प्रेमचंद जी साहित्य में वृद्ध विमर्श की झांकी आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व ही वर्णित कर चुके थे।

महत्वपूर्ण शब्दावली :- वृद्ध विमर्श , सभ्यता और संस्कृति,नैतिकता, व्यवहार कुशलता प्यार, सहानुभूति, अधिकार , आधुनिकीकरण, युवा वर्ग , रिटायरमेंट, आत्मनिर्भर ,सद्भाव, आदर और लगाव

प्रस्तावना/भूमिका:

भारतीय सभ्यता और संस्कृति की रीड की हड्डी वृद्ध जन है। इन्होंने मातृ देवो भव: पितृ देवो भव: का पाठ पढा कर सारे पारिवारिक सदस्यों को एकता के सूत्र में बांधने का प्रयास शुरू से किया। वसुधैव कुटुम्बकम् सनातन धर्म और भारत के वृद्धजन का भी मूल संस्कार तथा विचारधारा है जिसका अर्थ है- धरती ही परिवार है । अब स्थिति यह हो गई है कि वृद्ध अपने ही घर में पराया की तरह रहने लगे हैं।

आज उपेक्षित, संस्कारविहीन, विकृत मानसिकता, माता पिता विहीन, विकृत मानसिकता वाले युवा अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए गलत संगति, नशा और आदतों के शिकार होकर गलत हरकतों को अंजाम दे रहे हैं। जैसे निर्भया हत्याकांड और कोलकाता में तत्काल हुए डॉक्टर बेटी के कांड तथा अन्य कई घटनाएँ उदाहरण के रूप में हमारे सामने है। महिलाओं द्वारा भी कई विभिन्न प्रकार के अमर्यादित व्यवहार आए दिन देखे जाते हैं। अमानवीय घटनाएं हमारे देश की बहू, बेटी, बच्ची और कामकाजी महिलाओं तक के साथ होती है। आज हमारे यहां की लड़कियां शिक्षा संस्थानों, कार्यालय, सड़कों, बसों, ट्रेन यहां तक की अपने घरों में भी सुरक्षित नहीं है । इसका कारण है हमारे परिवार में बड़े बुजुर्गों के अनुभव, मशवरा, देखरेख का अभाव तथा शिक्षा में भारत की सभ्यता, संस्कृति, परंपरा, नैतिकता, व्यवहार कुशलता , शिक्षा का अभाव है ।

आज की भूमंडलीकरण और आधुनिकता के दौड़ में मूल्य में व्यक्तिवादिता और दिखावा हावी हो चला है। युवा वर्ग बुजुर्गों की भावनाओं की अनदेखी कर जिम्मेदारी और अपने कर्तव्य को निभाना,सम्मान भी देना भूल गए हैं। भौतिकवादी युग में युवा पीढ़ी अंध मूढ़ता का प्रमाण दे, स्वार्थ में मग्न है। जो माता-पिता अपने जीवन के अंतिम क्षण तक बच्चों के प्रति समर्पित रहे उन्हें प्यार, सहानुभूति और अधिकार देते आए। वैसे वृद्धो के लिए वृद्ध आश्रम आज अंतिम शरण स्थल बन चुका है। प्रेमचंद जी ने उपर्युक्त तथ्य को भी अपने साहित्य का विषय बनाया है।

वहीं दूसरी ओर प्रेमचंद जी ने धृतराष्ट्र और वाजस्रवा जैसे वृद्ध को भी अपनी कहानी, उपन्यास में चित्रित किया है जो अपने मनमानी कर अपने परिवार के भविष्य को दांव पर लगा रहे हैं। प्रेम आश्रम में अमरकांत और समरकांत और निर्मला में मंसाराम और तोताराम जैसे चरित्र के रूप में उन्होंने इन्ही जैसे पिता पुत्र के द्वंद को दिखाया है । प्रेमचंद जी ने गृहदाह और अलग्योजा में सत्यप्रकाश और रग्घु के रूप में आदर्श पुत्र और भाई का भी चित्रण किया है जो अपने विवाह और पत्नी की भी अनदेखी करते है।

वर्तमान में औद्योगिक व्यवसाय, व्यवसायिक नीति ने यौवन और बचपन को ही अपनी चकाचौंध में ग्रसित नहीं किया है बल्कि बुढ़ापा को भी त्रासदी की राह पर ला दिया है। इस आधुनिकीकरण ने युवा वर्ग को कई मौके दिए हैं परंतु वृद्ध को नहीं। वृद्धजन कई अनुभवों से युक्त रिटायरमेंट के बाद भी आत्मनिर्भर नहीं बन पाए क्योंकि आज की आधुनिक कंपनियों को युवा वर्ग की आवश्यकता है। वहीं घर में निर्णायक भूमिका से भी बहिष्कृत असुरक्षित जीवन जीने को विवश हो जाते हैं। ऐसे में वृद्धो को कष्ट हीन मौत (यूथिनिसिया) प्रदान करने के धंधे को मान्यता प्रदान करने की मांग विकसित औद्योगिक समाजों में उठने लगी है। वृद्ध जन जो सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक थे। उनकी यह स्थिति समाज और देश के गर्त में जाने का इशारा है।

हमे नहीं भूलना चाहिए कि अनुभव हमारे लिए कितने सहायक हैं। महाभारत, रामायण,वेद, उपनिषद आदि में इसके उदाहरण दृष्टिगोचर हैं। किया। वही रामायण में दशरथ के कहने पर राम ने वनवास ग्रहण कर आदर्शवादी और पुरुषोत्तम की उपाधि से विभूषित हुए। श्रवण कुमार अपने माता-पिता के आदर्श पुत्र होने का गौरव प्राप्त किया। चंद्रगुप्त चाणक्य की बातों का अनुसरण करते हुए विशाल साम्राज्य का सम्राट बने। सत्य की राह पर चलने वाले और वृद्ध जनों का आदर करने वाले महाभारत में भीष्म पितामह, विदुर का कहना ना मानकर दुर्योधन ने भीषण युद्ध का आगाज किया जिसने कौरव वंश का नाश युधिष्ठिर महान राजा बने। इतिहास और साहित्य दोनों साक्षी है कि बुजुर्गों के अनुभव और सलाह मशवरे से लाभ उठाने वाले युवा नव निर्माण के लिए और विपरीत मार्ग पर चलने वाले युवा शक्ति पतन की ओर अग्रसर हुए।

आज के युवावस्था के सामने कई प्रश्न है। जो आंखें उन्हें देखकर प्रसन्न होती थी उन्हीं आंखों को नजरअंदाज करने का साहस वह कहां से लाते हैं? जिन हाथों ने उन्हें सहारा दिया, आज उन्हें वो सहारा ये युवा वर्ग क्यों नहीं दे पाते? जो माता-पिता उनकी सभी जरूर को पूरा किए, उनकी भावनाओं को वह अनदेखा कैसे करते हैं ? इस शोध का उद्देश्य युवावस्था को संकीर्णता की परिधि से बाहर निकालना, वृद्धजनों के प्रति समर्पण का भाव दिखाना, उनकी शारीरिक और मानसिक दुर्बलता को दूर करने के लिए तत्पर रहना, उनके उम्मीद पर खडा उतरने का प्रयास जागृत करना है। प्रत्येक वर्ग के युवा को यह बताना है कि पितृ ऋण और मातृ ऋण चुकाया नहीं जा सकता सिर्फ सेवा द्वारा ऋण कम किया जा सकता है।

वृद्धावस्था बाल्यावस्था का पुनरागमन है। जीवन की इस प्रक्रिया में अपनों का साथ ना छोड़कर परिवार के अंदर सामूहिक प्रेम, सद्भाव, आदर और लगाव पैदा करें। इससे संयुक्त परिवार खंडित होने से बच सकेगी।

दूसरी ओर वृद्ध जनों को पुरानी अनुपयोगी परंपरा और रूढ़ियों को बदलकर नए उपयोगी बातों को स्वीकार कर आगे आना चाहिए। अपने बच्चों के पसंद ना पसंद, जीवन में करियर तथा जीवनसाथी के चुनाव की स्वतंत्रता देनी चाहिए। हां उन्हे बच्चो की देखरेख , राय मशवरा, भला बुरा, उचित अनुचित का ध्यान जरूर रखना चाहिए। वृद्ध सास को अपनी बहू को अपनी बेटी की तरह समझ कर उनके कार्य में सहायक बनना चाहिए।

इस प्रकार के कई उपदेश प्रेमचंद के कथा साहित्य में वर्णित है जो आज के समय में भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने कल से थे। प्रेमचंद जी ने महिला के विभिन्न रूपों बेटी, पत्नी, प्रेमिका, सास, वेश्या, समाज सेविका, सेविका तथा पुरुषों के विभिन्न रूप बेटा, पति, पिता, प्रिय, नेता, वकील, डॉक्टर, अध्यापक, सभी को अपने साहित्य का हिस्सा बनाकर उनकी समस्याओं को दिखाकर जागरूक करने का प्रयास किया है। इसलिए उनके कथा साहित्य का अध्ययन आज के लिए भी उतना ही आवश्यक है जितना उस समय था। इस शोध का एक उद्देश्य है प्रेमचंद की कथा साहित्य की ओर पाठक समूह को वापस आकर्षित करना भी है। जिससे आज की महिलायें और पुरुष यथार्थ का सामना दृढ़ता से करते हुए भावी पीढ़ी के लिए आदर्श स्थापित कर सके।

वृद्ध विमर्श की अवधारणा:

वृद्धविमर्श का अर्थ है वृद्धावस्था की परिस्थितियों, घटनाओं आदि का चिन्तन करना अर्थात वृद्धावस्था की समस्याओं को समझकर उनके लिए उचित समाधान करना ।वृद्धावस्था या वार्धक्य जीवन की उस अवस्था को कहते हैं जिसमें वयः मानव जीवन की औसत काल के समीप या उससे अधिक हो जाती है। उम्र बढ़ने के इस अध्ययन को जेरोन्टोलॉजी कहते हैं।

वृद्ध का शाब्दिक अर्थ है पका हुआ, परिपक्व । समाज के वृद्ध सदस्य' समानार्थी शब्दः बुजुर्ग, वृद्ध, वरिष्ठ बूढ़ा। विशेषण वृद्ध; ('एज्ड' का उच्चारण दो अक्षरों में किया जाता है)“ समाज के वृद्ध सदस्य” समानार्थी शब्दः वृद्ध , बूढ़ा , वरिष्ठ,पुराना।

वृद्धावस्था को उम्र के हिसाब से कई भागों में बांटा जाता है:

युवा वृद्ध - 60 से 75 साल, मध्यम वृद्ध-75 से 84 साल, अति वृद्ध-85 साल या उससे ज़्यादा
मनुस्मृति में सम्मान के आधार पर **पांच प्रकार के वृद्ध** बताए गए हैं:-धन वृद्ध, बल वृद्ध, आयु वृद्ध, कर्म वृद्ध और ज्ञान वृद्ध या विद्या वृद्ध।

वृद्धावस्था से जुड़ी कुछ समस्याए:

1. वृद्ध लोगों में प्रायः पुनर्योजी क्षमता सीमित होती है और वे युवा वयस्कों की तुलना में रोग, संलक्षण, आघात और अन्य क्षत्रियों के प्रति अधिक असुरक्षित होते है
2. वृद्धावस्था एक धीरे-धीरे आने वाली प्राकृतिक प्रक्रिया है ।
3. वृद्ध लोगों को रोग लगने की संभावना ज़्यादा होती है।
4. वृद्धावस्था में होने वाले कुछ आम रोग हैं - हृदय रोग, कैंसर, अस्थिरोग, मोतियाबिंद, टाइप-2 मधुमेह, अल्ज़ाइमर रोग।
5. वृद्धावस्था में मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाए रखने के लिए व्यायाम, ध्यान, पूर्ण नींद, स्वस्थ भोजन, और क्रियाशील जीवन शैली अपनानी चाहिए।
6. वृद्धावस्था में नकारात्मक विचारों से बचना चाहिए ।
7. लोगों की आयु बढ़ती जाती है, उनकी आँख का लेंस मोटा होता जाता है, सख्त होता जाता है, और वे पास की वस्तुओं पर कम ध्यान केंद्रित कर पाते हैं, जैसे पठन सामग्री (एक विकार जिसे प्रेसबायोपिया) कहा जाता है।

वृद्ध का महत्व: कई कारणों से समाज में पहले भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं:-

1. बुद्धि, अनुभव, अंतर्दृष्टि निर्णय लेने और समस्या-समाधान में,
2. सांस्कृतिक संरक्षण,समुदायों के भीतर पहचान और निरंतरता की भावना को बनाए रखने में मदद,
3. मेंटरशिप- जीवन के विभिन्न पहलुओं में मार्गदर्शन और सहायता,
4. सामुदायिक सहभागिता- स्वयंसेवी कार्य, स्थानीय संगठनों में भागीदारी और सामाजिक बंधन मजबूत बनाने में सहयोग,
5. आर्थिक योगदान- अर्थव्यवस्था में अंशकालिक भूमिका में हों या उद्यमी के रूप मे,
6. अंतर-पीढ़ीगत संबंधों,सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा से रूढ़िवादिता कम करने में ,
7. भावनात्मक समर्थन प्रदान कर तथा चुनौतीपूर्ण समय में स्थिरता और बुद्धिमता प्रदान करने में ,
8. वकालत : कई वृद्ध लोग अपनी जनसांख्यिकी को प्रभावित करने वाले मुद्दों, स्वास्थ्य देखभाल, सामाजिक सुरक्षा की वकालत करने में |
9. कुल मिलाकर, वृद्धों की उपस्थिति और भागीदारी समाज को समृद्ध बनाती है, तथा उसे अधिक विविधतापूर्ण और लचीला बनाती है। *अर्थव्यवस्था में योगदान, आधुनिकीकरण, व्यक्तिवादिका ने सामाजिक रिश्ते नाते संस्कारों में बदलाव ला दिया।

प्रेमचंद के साहित्य में वृद्धि विमर्श के उद्देश्य:

1. प्रेमचंद के कथा साहित्य में विद्यमान गौण विमर्श को मुख्य विमर्श का रूप देना और उसकी प्रासंगिकता को समाज में प्रचार प्रसार करना।
2. प्रेमचंद के साहित्य के प्रति आज के पाठक समूह को आकर्षित करना जिससे यथार्थ उन्मुख आदर्श समाज की स्थापना करना।
3. युवा वर्ग के विकृत मानसिक प्रवृति में साहित्य के प्रति आकर्षण और लोगो के प्रति संवेदना का विकास कराना ।
4. समाज में वृद्धो की दशा और दिशा बदलना।
5. संयुक्त परिवार के बिखराव को रोकना,परिवार में आपसी प्रेम सहानुभूति और साझेदारी को बढ़ाना।
6. वैचारिक पतन वाले युवा वर्ग (महिला,पुरुष)को उसके कर्तव्य बोध का एहसास कराना तथा आत्म मंथन करने को प्रेरित करना।

7. समाज में वृद्धो की दशा और दिशा बदलना।
8. युवावस्था वृद्धावस्था के अंतर द्वंद्व को खत्म करने का प्रयास करना ।
9. वृद्ध जनों के प्रति उपेछा को कम कर, उन्हें सभ्यता और सस्कृति का धरोहर समझने का भाव पैदा करना।
10. वृद्ध जनों को उत्साह के साथ-साथ जीवन यापन करने के लिए प्रेरित करना।
11. युवा महिला और पुरुष के सोच में बदलाव के साथ-साथ वृद्ध पुरुष और महिलाओं को भी मानसिकता में बदलाव के लिए प्रेरित करना।

प्रेमचंद के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श का महत्व:

वृद्ध विमर्श 21वीं सदी के एक ऐसे विमर्श में है जो प्रत्येक परिवार को किसी न किसी प्रकार से प्रभावित कर रही है। कहीं वृद्ध वर्चस्व वाला परिवार नए बदलाव जैसे प्रेम विवाह, महिलाओं का नौकरी करना आदि को नहीं अपनाते तो कहीं आधुनिकता और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित युवा वर्ग अपने वृद्ध जनों के संस्कारों, उनके बातों को अपने जीवन में आत्मसात नहीं कर पाते, परिणाम द्वंद,अलगाव, उपेक्षा,कर्तव्यहीनता और संवाद हीनता की स्थिति । ये सारी बाते प्रेमचंद जी ने अपने साहित्य में सौ वर्ष पूर्व ही बयां करना शुरू कर दिया था। परन्तु गौण रूप से,वही आज समाज में मुख्यतया वृद्ध विमर्श के रूप में प्रचलित हो रहा है।

आज समाज में कोई परिवार रुढ़ीगत परंपराओं के पंजे में फंसा रहता है तो कोई परिवार एकल परिवार की ओर उन्मुख होता है, जहां माता-पिता और अन्य वृद्ध जन का कोई स्थान नहीं होता अगर होता भी है तो घर का एक कोना।

आज का युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित अपनी रूढ़ीगत विचारधारा की परिधि से निकलकर विकास उन्मुख हो रहे हैं। दूसरी ओर चरित्र निर्माण में सहायक मूल्य और संस्कारों भी युवाओं में लुप्त हो रहे है। परिवार बिखरते जा रहे हैं। युवावस्था वृद्धावस्था की परिस्थितियों से अनभिज्ञ है। उसकी सोच विकृत और विचार पतन की ओर अग्रसर हो गई है। इसके कारण बुजुर्गों में अकेलापन, संवाद हीनता, मानसिक और शारीरिक रोग, आघात आदि बढ़ रहे हैं। उनकी पुर्नयोजित क्षमता, साझेदारी कम तथा असुरक्षित रह गए हैं। परिवार के मुखिया की पदवी तो उनसे छीन ही गई है उन्हें दो वक्त की रोटी, शांति और आराम भी नसीब नहीं हो पा रहे हैं। पुत्र का जिम्मेदारियो से पलायन मुखी व्यक्तित्व, बहुओ की कर्तव्यहीनता , बेटियों की परनिर्भरता, बच्चो की अपनी दुनिया में व्यस्तता और पाश्चात्य दिखावे होने के कारण आज के वृद्ध दैन्य स्थिति में है। ऐसे में प्रेमचंद की साहित्य में उठाए गए वृद्धो की समस्या, समाज और पारिवारिक संबंधों पर उसके प्रभाव पर मुख्य रूप से विचार, विमर्श, चिंतन मनन की जरूरत जान पड़ती है।

वृद्धो की दशा और दिशा बदलने, संयुक्त परिवार को एकल परिवार बनने से रोकने के लिए, वृद्धो के अनुभव और संस्कारों से युवा वर्ग के जीवन मूल्यों में हो रहे विघटन को रोकने तथा वृद्ध जनों को उत्साह के साथ जीवन यापन करने के लिए आज वृद्ध विमर्श का महत्व बन जाता है।

प्रेमचंद के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श की प्रासंगिकता:

प्रेमचंद जी ने पंच परमेश्वर में जुम्मन शेख अपनी मौसी तथा बूढी काकी में पंडित बुद्धि राम कैसे अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए अपनी काकी को धोखा दे उसकी संपत्ति हड़प लेता है। इस कहानी के जरिए प्रेमचंद जी युवा वर्ग की विकृत मानसिकता, स्वार्थ लोलुपता,भौतिकवादी, वैचारिक पतन और मूल्यहीनता को दिखाती है। उनकी सारी कहानी मुख्य या गौण रूप से समाज की कई समस्याओं की ओर पाठक वर्ग का ध्यान खींचती है।

स्वार्थ के वसीभूत होकर वह वृद्ध को मुखिया के पद से तो बहिष्कृत करता ही है। उसकी अवहेलना करते हुए उसे दो वक्त की रोटी तक नहीं देता। बूढ़ी काकी में जठराग्नि शांत न होने के कारण तथा जीभ स्वाद की अभिलाषा के कारण अपने ही भतीजे के बड़े बेटे के तिलक में झूठे पत्तल का खाना उठाकर खाना खाती है। इस प्रकार की अमानवीयता, विवेकविहीन चरित्र हमारे देश की सभ्यता संस्कृति पर चोट है।इसे रोकना हम सब का दायित्व है। यह सिर्फ प्रेमचंद की कहानीबेटो वाली विधवा ,विध्वंशकहानी नहीं है यह वास्तविकता है जो उन्होंने साहित्य में दिखाने का प्रयास किया है।

दूसरी और प्रेमचंद जी ने भी अपने कहानी अलग्योझा में रगघु को एक आदर्श पुत्र, भाई के रूप में चित्रित किए हैं। रग्घू भोलानाथ की पहली पत्नी से उत्पन्न पुत्र है जो उसकी मृत्यु के बाद अपने पिता की दूसरी पत्नी पन्ना और उसके बच्चों की देखभाल बड़ी शिद्दत से करता है । वह अपनी पत्नी मुलिया के घर बंटवारे के बात को नजरअंदाज कर अपने भाइयों का भरण पोषण अच्छे से करता हुआ मर जाता है। वही केदार अपनी भाभी के दुख से पीड़ित उसके दुख को दूर करने के लिए उससे शादी कर उसके बच्चे की जिम्मेदारी अपने कंधों पर ले लेता है। पन्ना जो मलिया से नफरत करती है वह उसके लिए अपने बेटे से शादी का प्रस्ताव रखती है। इस कहानी के जरिए प्रेमचंद जी ने आदर्श परिवार और पारिवारिक संबंधों के प्रेम को दिखाया है जो आज के युवा वर्ग के लिए प्रेरणा दायक हो सकता है। प्रेमचंद जी की ईदगाह, पछतावा ,अलग्योझा और नमक का दरोगा भी उपदेशआत्मक कहानी की श्रेणी में है। जिसे आज के समाज को पढ़ने की आवश्यकता है।

प्रेमचंद ने तो यहां तक दिखाया है कि पिता पुत्र के रिश्तों की जटिलता के कारण जिस प्रकार रेहन का रग्घू विदेश में बस जाता है। उसी प्रकार आज का युवा वर्ग भी अपनी जमीन से दूर होकर मृत्यु संस्कार में भी शामिल होना पसंद नहीं करते। चीफ की दावत के सोमनाथ की तरह आज का युवा अपनी मां को अतिथि आगमन पर एक कोने में छुपाता है। इन सभी बातों को प्रेमचंद जी ने सौ वर्ष पूर्व ही अपने समाज की स्थिति का अध्ययन करने के बाद अपनी लेखनी का विषय बनाकर लोगों को जागरूक करने का प्रयास किया । इसलिए उनके उपन्यास, कहानी आज भी प्रासंगिक है।

इस प्रकार के अन्य कई देखी अनदेखी पहलुओं को मैं अपने शोध में विस्तार से चित्रित करुँगी जो आज के युवा और वृद्ध दोनों को आपसी द्वन्द को ख़त्म कर परिवार में सुखद माहौल निर्माण में सहायक होंगे। प्रेमचंद जी के साहित्य को मनोविश्लेष्णात्मक शोध तथा अब नए ढंग पढ़ने की आवस्यकता है तभी साहित्य समाज को दर्पण दिखा पायेगा।

प्रेमचंद के कथा साहित्य में वृद्ध विमर्श में प्रयुक्त प्रविधि:

इस शोध के अंतर्गत में ऐतिहासिक विधि, वर्णनात्मक विधि, विश्लेषणात्मक विधि, मनोविश्लेषणात्मक विधि, समाजशास्त्रीय विधि आदि का प्रयोग करूंगी। इस शोध के लिए प्राथमिक स्रोत के स्थान पर में द्वितीय स्रोत का प्रयोग करूंगी, जैसे अध्येय रचनाओं पर किए गए पूर्व शोध से संबंधित पुस्तकों, पत्र_पत्रिकाओं, मीडिया, युटुब, गूगल पर मौजूद शोध पत्र, प्रेमचंद के मानसरोवर खंड की कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक और लेख इत्यादि।

अध्याय करण और शोध की रूपरेखा:

क) वृद्ध विमर्श की परिभाषा और अवधारणा
ख) प्रेमचंद के साहित्य में वृद्धावस्था और युवावस्था का अंतर द्वंद
ग) प्रेमचंद के साहित्य में मानसिक विकृत, स्वार्थी और अनैतिक युवा वर्ग से प्रभावित वृद्ध जीवन
घ) प्रेमचंद के साहित्य में आदर्श, संस्कारी, वैचारिक, कर्तव्य बोध और नैतिक व्यवहार से युक्त युवा वर्ग से समृद्ध वृद्ध जीवन
ङ) सभी वर्ग के वृद्धो की शारीरिक और मानसिक समस्याएं
च) किसान जमींदार वर्ग के वृद्ध की समसयाओ में समानता और असमानता
छ) समाज में व्यापत मूल्यहीन परम्पराओ को अपने बच्चो के लिए बदलने वाले वृद्ध
ज) प्रेमचंद के कथा साहित्य में रूढ़ीगत मान्यताओं से ग्रसित वृद्ध
झ) परिवार और समाज में परिस्थिति से विद्रोह करते वृद्ध
ञ) परिवार और समाज की स्थिति में योगदान देते वृद्ध
ट) युवाओं और अपने सबंधियों से वृद्धों की इच्छाएं एवं आकांक्षाएं

निष्कर्ष / उपसंहार

हमें रामायण, महाभारत, पुराण, वेद और उपनिषद् आदि में अपने माता, पिता और वृद्ध जन के आदर, सम्मान और आज्ञा पालन की बात सिखाई जाती है। परंतु आज की युवा शहरी चकाचौंध और अपने विलासिता पूर्ण जिंदगी जीने की ख्वाइस के कारण अपने माता-पिता को न समय दे पाते हैं नहीं आदर, सम्मान और न घर में मुखिया की पदवी। आत्मनिर्भर बनने के बाद आज के युवा सिर्फ अपने पैसों को अपने तक सीमित रखना चाहते हैं। वृद्ध आयु में माता पिता की देखभाल करना, उनके अनुभवों और तजुर्बों को आत्मसात कर अपने परिवार और समाज को आगे बढ़ाने की बात वह भूल जाते हैं । भौतिकवादी युग में युवा पीढ़ी अंधमूढ़ता का प्रमाण है क्योंकि वह बुजुर्गों की भावनाओं की अनदेखी कर रहे है। आज की युवाओं को बुजुर्गों का अभिवादन करना चाहिए और उनके आज क्योंकि उनका आशीर्वाद आगे बढ़ाने की प्रेरणा देता है। युवा पीढ़ी को हमेशा याद रखना चाहिए कि वह भारतवर्ष के इसी गौरव कूल के वंशज हैं जिसमें बुजुर्गों का स्थान सर्वोपरि एवं आदरणीय है। प्रेमचंद और अन्य कथाकार ने अपने समय में कथा साहित्य के माध्यम से युवा पीढ़ी का ध्यान बुजुर्ग के उन सभी समस्याओं की ओर आकर्षित करना चाहा है जिसको वह अपनी व्यवस्था स्वार्थ पूरक्त एवं कर्तव्य हीनता के कारण नहीं देख पा रहे थे देश के भविष्य निर्माता युवा वर्ग अगर विवेक शून्य हो जाएंगे तो सामाजिक पतन स्वाभाविक है अतः आज के युवा वर्ग को अपने अंदर उन सभी आदर्श को स्थान देना होगा जिससे वृद्ध आश्रम खोलने की आवश्यकता ना पड़े। सभी बुजुर्ग अपने घर पर सुसंगठित परिवार में प्रसन्नचित हो रह सके। जिस प्रकार मां-बाप बच्चों को सुसंस्कृत करते हैं ठीक उसी प्रकार आधुनिक युवा पीढ़ी उनके संस्कारों की उंगली थामें बुजुर्गों को लेकर आधुनिकता के नए मंजिल की ओर अग्रसर हो, तभी देश की तरक्की और प्रगति संभव है।

संदर्भ ग्रंथ

प्रेमचंद, (2002), मानसरोवर भाग 4, नोएडा: मयूर पेपर बैग्स प्रकाश
प्रेमचंद, (2005), कुछ विचार, इलाहाबाद: लोक भारती प्रकाशन
प्रेमचंद, (2011), मानसरोवर भाग 1, दिल्ली: प्रकाशक प्रकाशन संस्थान
प्रेमचंद, (2011), मानसरोवर भाग 7, पटना : अनुपम प्रकाशन
प्रेमचंद, (2011), मानसरोवर भाग 8, पटना: अनुपम प्रकाशन
प्रेमचंद, (2012), सोजे वतन, नई दिल्ली: प्रकाशक प्रकाशन संस्थान,
प्रेमचंद, (2013), मानसरोवर भाग 2, पटना: प्रशासन संस्थान
प्रेमचंद, (2020), प्रेमचंद की हास्य कहानियां, नई दिल्ली: लेसिकों बुक्स प्रकाशन
प्रेमचंद, (2020), नारी जीवन की कहानी, न्यू दिल्ली: लेसिकन बुक्स प्रकाशन
प्रेमचंद के नाटक: संग्राम, कर्बला,प्रेम की वेदी, निबंध,लेख
प्रेमचंद के उपन्यास गोदान,रंगभूमि ,गबन, प्रतिज्ञा, कर्मभूमि, सेवासदन, प्रेमाश्रम, निर्मला